करवा चौथ कथा — वीरवती का पुनर्कथन

Karwa Chauth Vrat Katha — Veeravati Retelling

Source: Vrataraja — 1897 controlling Sanskrit scan, Balmeeki Campus collection. Also compared: 1897 opening — physical scan 177, katha begins after preliminary puja prose; 1897 closing — physical scan 180, verses 38–41 and Vamana Purana colophon; Vrataraja — catalogued 1884 lithographic comparison, physical scans 223–226; 1897 Archive metadata — edition identity and recorded digitisation licence; Creative Commons CC0 — digitisation notice, not a licence claim for modern translations.

Valkala's own retelling of the katha in Vishvanatha Sharma's Vrataraja, 1897 Sanskrit print, Karak Chaturthi katha 1–41 (compiler's Vamana Purana attribution), not a transcription of the original text.

द्रौपदी का प्रश्न और वीरवती का परिवार

KATHA 1–13

मांधाता के कथन से प्रसंग खुलता है। अर्जुन इन्द्रकील पर्वत गए हुए थे और द्रौपदी चिंतित थीं। उन्होंने कृष्ण को याद करके पूछा कि विघ्न और कठिनाइयों के बीच अपने पति की भलाई के लिए क्या किया जाए। कृष्ण ने एक व्रत का प्रसंग सुनाया और कहा कि पार्वती ने भी महेश्वर से ऐसा ही प्रश्न किया था। उस संवाद में शिव ने करक चतुर्थी का उल्लेख किया। पार्वती ने उसकी विधि और प्राचीन कथा पूछी। यह कथा के भीतर सलाह है, आज हर व्यक्ति पर लागू उपवास का आदेश नहीं।

शिव ने शक्रप्रस्थ नाम के समृद्ध नगर का वर्णन किया। वहाँ वेदशर्मा नाम के विद्वान ब्राह्मण रहते थे; उनकी पत्नी लीलावती थीं। उनके सात पुत्र और वीरवती नाम की एक पुत्री थी। कथा वीरवती के सौंदर्य का पारंपरिक वर्णन करती है और बताती है कि विवाह योग्य होने पर उसका विवाह एक विद्वान ब्राह्मण से हुआ। वह कुछ समय अपने पिता के घर आई हुई थी। स्रोत के मुख्य पाठ में पिता वेदशर्मा हैं; उसका फुटनोट वेदधर्मा नाम का दूसरा पाठ भी बताता है। यहाँ मुख्य पाठ का नाम रखा गया है।

The episode opens with Mandhata's report. Arjuna has gone to Mount Indrakila, and Draupadi is anxious. Remembering Krishna, she asks what may be done for her husband's welfare amid obstacles and difficulties. Krishna recalls a vow and says Parvati once asked Maheshvara a similar question. In that dialogue Shiva names Karak Chaturthi; Parvati asks about its observance and earlier story. This advice belongs within the narrative, not a fasting command for everyone today.

Shiva describes prosperous Shakraprastha. The learned Brahmin Vedasharma lives there with his wife Lilavati. They have seven sons and a daughter, Veeravati. After a conventional description of her beauty, the story says she marries a learned Brahmin and later spends some time at her father's house. The main text calls her father Vedasharma; its footnote records Vedadharma as an alternative. This retelling retains the main-text name.

झूठा चंद्रोदय और शोक

KATHA 14–26

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी पर वीरवती ने व्रत किया। कथा की शाम की पूजा में वट-वृक्ष के नीचे गौरी का चित्र और उनके साथ शिव, गणेश तथा छह मुख वाले देव का वर्णन है। धूप, फूल और सौभाग्य की प्रार्थना के बाद अर्पण और अनाज भरे करकों की भेंट का उल्लेख आता है। स्त्रियाँ चंद्रमा की प्रतीक्षा करने लगीं। ये पुराने प्रसंग की सामग्री और प्रार्थनाएँ हैं, इस पाठक के लिए खरीद या पूजा की निश्चित सूची नहीं।

वीरवती भूख से व्याकुल होकर गिर पड़ी और रोने लगी। भाइयों ने उसे उठाया और ठंडे जल से उसका मुख पोंछा। उसके कष्ट से दुखी होकर उन्होंने एक युक्ति की: वट-वृक्ष पर मशाल जैसा प्रकाश जलाया और कहा कि चंद्रमा निकल आया है। वीरवती ने उस प्रकाश को चंद्रमा मान लिया, अर्घ्य दिया और भोजन किया। इस चयनित पाठ में छलनी का दृश्य नहीं है। कथा इसके बाद उसके पति की मृत्यु बताती है और उसे व्रत के बीच भोजन करने से जोड़ती है। यह कथा का धार्मिक कारण-संबंध है, वास्तविक शोक का कारण या किसी पत्नी का दोष नहीं।

शोक में एक वर्ष बीता। फिर वीरवती ने शिव का स्मरण करते हुए उसी व्रत को दोबारा किया। वर्ष बीतने का यह कथन लगातार एक वर्ष भूखा या प्यासा रहने का निर्देश नहीं है। पढ़ने या प्रार्थना करने के लिए भोजन-पानी छोड़ना आवश्यक नहीं।

On Kartika Krishna Chaturthi Veeravati observes the vow. The account's evening worship describes an image of Gauri beneath a banyan, with Shiva, Ganesha and the six-faced deity. Incense, flowers and a prayer for marital good fortune are followed by offerings and gifts of grain-filled pots. The women await the moon. These are the old account's materials and prayers, not a compulsory shopping or worship list for this reader.

Overcome by hunger, Veeravati falls down and weeps. Her brothers lift her and wipe her face with cool water. Distressed by her suffering, they devise a trick: light a torch-like flame in the banyan tree and announce that the moon has risen. She mistakes it for the moon, offers arghya and eats. This selected text has no sieve scene. The narrative then reports her husband's death and connects it with eating during the vow. That is the story's religious causal explanation, not a cause of real bereavement or a spouse's fault.

A year passes in grief. Remembering Shiva, Veeravati observes the vow again. The elapsed year does not instruct readers to remain without food or water for an entire year. Neither reading nor prayer requires giving up food or water.

इन्द्राणी का आगमन और कथा का चमत्कार

KATHA 27–36

कथा में इन्द्राणी स्वर्ग से दिव्य सहचरी स्त्रियों के साथ वहाँ आती हैं; मनुष्य स्त्रियाँ भी व्रत में सम्मिलित हैं। वीरवती उनका स्वागत और पूजन करती है तथा विनयपूर्वक अपनी बात कहती है। वह पूछती है कि इतनी भक्ति के बाद भी यह विपत्ति क्यों आई और अपने पति को फिर जीवित करने की प्रार्थना करती है।

इन्द्राणी कहती हैं कि पिता के घर पहले किए व्रत में असली चंद्रोदय से पहले अर्घ्य और भोजन हुआ था; इसलिए वह प्रसंग अधूरा रहा। वे अब सही क्रम से करक व्रत करने को कहती हैं और पति के जी उठने का आश्वासन देती हैं। कृष्ण के कथन में वीरवती ने उनकी बात सुनकर फिर व्रत किया। इन्द्राणी प्रसन्न हुईं और उसके पति पर जल छिड़का। कथा उसे जीवित उठते हुए बताती है; आगे स्वास्थ्य, लंबी आयु, धन और पुत्रों का वर्णन करती है तथा वीरवती के आगे भी व्रत रखने का उल्लेख करती है।

यह इन्द्राणी का कथानक के भीतर उत्तर और कथा का अलौकिक समापन है। इससे उपवास को उपचार, मृत्यु को उलटने का उपाय या संतान, धन और दीर्घायु की गारंटी नहीं कहा जा सकता। किसी की बीमारी या पारिवारिक हानि को गलत अर्घ्य अथवा भोजन-पानी लेने का दंड मानना इस पाठक का संदेश नहीं है।

Indrani descends with celestial women, while human women also participate in the observance. Veeravati welcomes and worships her, then respectfully asks why such calamity followed her devotion. She prays for her husband to be restored to life.

Indrani replies that, during the earlier observance at her father's house, arghya and food preceded actual moonrise and the rite was therefore incomplete. She tells Veeravati to repeat the Karak vow in its proper sequence and promises her husband's revival. In Krishna's narration Veeravati follows this counsel. Pleased, Indrani sprinkles water on her husband. The story describes him rising alive and goes on to speak of health, long life, wealth and sons, followed by Veeravati's continuing observance.

This is Indrani's answer within the plot and the story's supernatural conclusion. It does not make fasting a treatment, a way to reverse death or a guarantee of children, wealth or longevity. Illness and family loss must not be treated as punishment for a mistaken offering or for eating and drinking.

द्रौपदी के प्रसंग में वापसी और समापन

KATHA 37–41

अंत में सूत कहते हैं कि कृष्ण की बात सुनकर द्रौपदी ने भी वह व्रत किया और उसके प्रभाव से पाण्डवों का अतुल राज्य लौटा। कथा के आगे के पद स्त्रियों के सौभाग्य और बच्चों के कल्याण की प्रशंसा करते हैं। इसमें दूध से भरे करक की भेंट, अर्पण की प्रार्थना और वस्त्र सहित दान का उल्लेख है। अंतिम पद संतान, पौत्र और संपन्नता जैसे पारंपरिक आशीर्वाद कहता है।

इसके बाद करक नाम की चतुर्थी के समापन-वाक्य में वामनपुराण का नाम आता है। यहीं इस चयनित कथा का अंत है; अगली गौरी चतुर्थी की सामग्री इसमें नहीं जोड़ी गई है। कथा में राज्य की वापसी और परिवार-संबंधी फल धार्मिक कथन हैं, ऐतिहासिक प्रमाण या आधुनिक लाभ का वादा नहीं। दूध, पात्र और वस्त्र की भेंट भी इस पाठक की अनिवार्य शर्त नहीं है। इस पुनर्कथन का उद्देश्य पूरा चयनित प्रसंग पढ़ना है, किसी की स्थिति, विवाह या संतान के आधार पर पूजा का अधिकार तय करना नहीं।

At the close Suta says that Draupadi followed Krishna's counsel and performed the vow; the narrative credits it with the Pandavas' recovery of their incomparable kingdom. Subsequent verses praise women's marital good fortune and children's welfare. They mention a milk-filled pot, an offering prayer and a gift with clothing. The final verse gives conventional blessings of children, grandchildren and prosperity.

The colophon then names the Vamana Purana and closes the Chaturthi called Karak. This is the end of the selected account; the following Gauri Chaturthi material is not appended. Restoration of a kingdom and family benefits are religious narrative statements, not historical proof or promises of modern gain. Gifts of milk, a vessel or clothing are not conditions for using this reader. The retelling offers the whole selected episode without deciding anyone's right to pray by marital status or parenthood.